RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

बंदिश का औचित्य, महत्व एवं उपयोगिता

रूचि रानी गुप्ता

शोध छात्रा (SRF) संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

बंदिश शब्द के अर्थ पर विचार करने से ज्ञात होता है कि बन्दिश फारसी भाषा का शब्द है इस शब्द का अर्थ है 'बाँधने की क्रिया का भाव' बन्दिश शब्द का अर्थ है कि एक संगीत का विद्वान अथवा कलाकार द्वारा रचित शब्दों की एक परिकल्पना या स्वरों व शब्दों अथवा बोलों द्वारा सुसज्जित कलात्मक अभिव्यक्ति, जिसमें कि स्वर ताल पद और लय का समन्वय हो। स्वर ताल एवं पद में सुबद्ध और सुनियोजित रचना ही 'संगीत में बंदिश' कहलाती है।

''बन्दिश के द्वारा राग के अन्तः स्वरूप को एक सुनिश्चित रूप मिलता है, यानि उसकी आकृति स्पष्ट रूप से सामने आती है। अनेक बंदिशों द्वारा राग के विविध प्रकार से चलन की जानकारी भी होती है।''[1]

गायन के संदर्भ में कह सकते है कि बंदिश के द्वारा ही राग के अस्तित्व को समझा जा सकता है। बंदिश राग के लिए एक दर्पण के समान है गायन की बंदिशों को 'गेय पद' भी कहा जा सकता है। संगीत की गायन, वादन अथवा नृत्य किसी भी विधा के कलाकार की कल्पनात्मक अभिव्यक्ति बंदिश के सौन्दर्य द्वारा ही अभिव्यक्त की जा सकती है। बंदिश के आधार पर ही गायन, वादन और नृत्य तीनों कलाओं का अस्तित्व होता है।

वादन के संदर्भ में हम तबले के ठेके को 'ताल की बंदिश' कह सकते है। बन्दिशों का प्रस्तुतीकरण यह एक कला का अविष्कार सा प्रतीत होता है। तबला वादन के प्रस्तुतीकरण के विषय को 'बंदिश' कहते है। तबला वादन की बंदिशों के प्रस्तुतीकरण के सभी पक्षों में कलात्मक सुंदरता होनी चाहिए।

''बंदिश में सुन्दरता कहा और कैसे निर्माण हो सके यह जान लेने के लिए बंदिश संकल्पना का जब विश्लेषण करते है तब हमें पता लगता है, कि बंदिश के तीन मूलभूत घटक अंग (Constituents) होते है, जो इस प्रकार है–

ढाँचा, गढ़न–आकार Form1)	विषयवस्तु–भाषा साहित्य Content-matter2)	प्रस्तुतीकरण का तरीका Process of Presentation3)	
		प्रस्तुतीकरण का तंत्र निकास (शैली (Style)	प्रस्तुतीकरण का मंत्र–विचार (Thought A)	Process) B),[2]

प्रायः एक तबले के कलाकार के मन में एकाध नाद शब्द रेखाकृति का रूप निर्माण कर लेते है अथवा एकाध चलन उस कलाकार को पसन्द आता है और इसी भूमिका पर यह कलाकार, अपनी प्रतिभा शक्ति की मदद से तबलें के उचित बोलों को चुनता है उसके मन में तालाकृति निश्चित हो चुकी होती है जाति व लय के बारें में भी कलाकार ने चिन्तन कर लिया होता है फिर इन सभी गुणों के मिश्रण से बंदिशकार अपनी बंदिश की निर्मिती पूरी कर पाता है।''

बन्दिश शब्द का अर्थ है ''बाँधना''। बन्दिश के मायने प्रतिबन्ध है। अंग्रेजी का शब्द bind हो या जर्मन का शब्द band या या फिर फारसी का शब्द बन्दिश तीनों शब्दों के अर्थ एक समान है– ''बाँधना'' विशिष्ट राग अथवा विशिष्ट ताल में बंधा हुआ गीत या स्वर रचना ही बंदिश है। बन्दिश एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा राग के सम्पूर्ण विस्तार स्वरूप को एक आकार दिया जा सकता है। बन्दिश ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शास्त्रीय संगीत की परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा जा सकता है। यदि बंदिशें न होती तो शास्त्रीय सांगीतिक पैतृक सम्पत्ति संरक्षित नही रह सकती थी। बंदिश शब्दों का वह ढांचा या है जिसमें कलाकार की कल्पनात्मक संरचना रहती है और स्वर–ताल का समन्वय भी रहता है। बन्दिश के इस अर्थ में प्राचीन प्रबन्ध की तुलना की जा सकती है, प्रबन्ध का अर्थ भी होता है, ''अच्छी तरह बँधा हुआ,'' किन्तु राग की बन्दिशों के गायन में जितनी कलाकार को स्वतंत्रता है इतनी स्वतन्त्रता प्रबन्ध में कलाकार को नही रहती थी।

''पं0 कुमार गन्धर्व जी के अनुसार– 'बंदिश व राग संगीत रूपी पुरूष का शरीर व आत्मा है। शरीर का आकार तो सर्वत्र एक सा नही हो सकता इसी तरह बन्दिशें भी एक ही प्रकार की नहीं हो सकती।''[3]

प्रत्येक बन्दिश का गठन करने से पूर्व आवश्यक तत्व कलाकार या रचनाकार के मस्तिष्क में आ जाते हैं। बंदिश एक ऐसा रेखाचित्र है, जिसे ध्यान में रखकर और गाकर ही कलाकार अपनी कल्पना विचार और प्रतिभानुसार उसमें विभिन्न प्रकार के रंग भरता है। एक अच्छी बंदिश जिसका

[1] भटनागर मधुरलता, ''भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान'', पृष्ठ संख्या 158

[2] तबला वादन में निहित सौन्दर्य, पृ0–56 माईणकर सुधीर विष्णु, सरस्वती प्रकाशन ग्वालियर।

[3] संगीत कला विहार– अप्रैल 1991, कुमार गार्न्धव जी के सांगीतिक विचार, प्रो0 भारवडेकर, पृष्ठ– संख्या– 52, 53

RRIJM 2015, All Rights Reserved

असर विद्वानों, कलाकारों तथा श्रोतागणों सभी के दिलों पर हो, उसके लिए कुछ तथ्य है जो कलाकार या रचनाकार में आवश्यक प्रतीत होते है–

1. कल्पनाशक्ति का प्रखर होना।
2. भावात्मक होना।
3. उत्साह से परिपूर्ण।
4. अपने गुरू एवं उस्तादों से प्रेरणा लेकर बंदिश की रचना करना।
5. श्रोतागणों की फरमाईश पर नयी रचनाओं का निर्माण करने की क्षमता।
6. घराने की आवश्यकतानुसार रचना करना।
7. नव निर्मित रागों तथा तालों में रचनाओं का निर्माण।

इन सभी गुणों के अतिरिक्त इसमें रचनाकार को स्वर, लय एवं ताल की अच्छी समझ होनी चाहिए।

डॉ0 कला श्रीखण्डे जी के अनुसार– ''संगीत की किसी भी विधा में संरचना सहसा गीत के अनुकूल ही होती है अर्थात् रचना की स्वर योजना गीत के भाव और शब्द की पुष्टि करने वाली होती है।''[4]

शास्त्रीय संगीत में स्वर लय राग इत्यादि विशेष महत्वपूर्ण तत्व होते है तथा शब्द और भाव रागोचित इसकी पुष्टि करने वाले।

बंदिश में तालपक्ष को रागपक्ष के समान ही महत्वपूर्ण माना गया है। बंदिश में ताल व लय का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। हमारे जीवन में अनुशासन व नियमों का होना नितान्त आवश्यक है इसी प्रकार हमारे संगीत में भी ताल की भूमिका है। संगीत में जब किसी स्वर, गीत अथवा काव्य के बोलों को नियमित नियम के अनुसार बाँधा जाता है तो यह बांधने की क्रिया ही ''ताल'' कहलाती है। ''मुख प्रधान–दहस्य नासिका मुख मध्य के तालहीन तथा गीतं नासाहीनं मुख यक्षा।''

अर्थात् जिस प्रकार शरीर में मुख और मुख में नासिका की प्रधानता होती है उसी प्रकार संगीत में ताल की।[5]

''किसी भी सांगीतिक रचना में साहित्य, राग, ताल और काल प्रमाण में सन्तुलन परम् आवश्यक है। प्रत्येक रचना का अपना काल प्रमाण लय होता है। कुछ रचनाएँ मध्य लय की होती है, जिसका अर्थ है मध्य लय उन रचनाओं के लिए अधिक अनुकूल है। इसी प्रकार विलम्बित लय की रचना को द्रुत लय में गाया जाए तो वह उतनी प्रभावोत्पादक न होगी जितनी मध्य में गाये जाने से।''[6]

ताल के विभिन्न खण्डों व बोलों के संयोजन में सामंजस्य होना चाहिए। बंदिश में सौन्दर्यवर्धन सम व विषम खण्डों के साथ–साथ बोलो के वजन से होती है। बोलों की मात्राओं, चिन्ह विभाग सभी को ध्यान में रखकर रचना की कल्पना करनी चाहिए।

एकल तबला वादन में क्रमशः कई रचनाया बंदिशों प्रकारों का वादन किया जाता है। समय के साथ–साथ इन सभी बंदिशों रचना प्रकारों का विकास होता गया ''वर्तमान समय में तबला वादन में जितने रचना प्रकार प्रचलित है उतने तबला वाद्य के अतिरिक्त किसी भी अन्य वाद्य में प्रचलित नहीं है। ढ़ेरो रचना प्रकार इस वाद्य के विद्वान वादकों एवं श्रेष्ठ रचनाकारों के माध्यम से विकसित हुए है।''[7]

''भारतीय संगीत में राग व ताल विशेष नियमों में बद्ध रचनाएँ है। राग एवं ताल की भूमिका द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि प्रस्तुतीकरण में किसे अधिक महत्व दिया जाये। 'एकल तबला वादन में राग का कार्य लहरे के माध्यम से मात्राओं का संदर्भ स्थान दर्शाना मात्र होता है।''[8]

तबला वाद्य के रचनाकारों ने निश्चित रूप से विभिन्न गति माध्यमों से प्रेरणा लेकर ऐसी सुन्दर रचनाएँ बनायी है जिनमें प्रकृति, जीवों का आकार–प्रकार और उनकी विभिन्न परिस्थितियों में होने वाली अलग–अलग गतिशीलता प्रमुख है बंदिश में ताल के साथ–साथ लय का भी प्रमुख स्थान है। ताल में निबद्ध बंदिश की बनावट व वजन भी ताल के अनुसार ही रखा जाता है; अतः नियमानुसार उसमें ताल परिवर्तन करके नही गाया जाना उचित प्रतीत होता है; क्योंकि उसकी बनावट व वजन समान मात्रा वाली किसी ताल से तो मेल खाएगी नहीं। जैसे– झपताल की बंदिश झपताल में तथा आड़ाचारताल की बंदिश आड़ाचारताल में ही अधिक सुशोभित रहेगी क्योंकि उनकी प्रकृति एवं स्वरूप के लिए वही वाले उपयुक्त है। ''बंदिश के शब्द (बोल) आदर्श रूप में ताल के बोलों के अनुसार होने चाहिए इसे यों भी कहा–कहा जा सकता है कि ताल के बोलों का वजन शब्दों के अनुरूप होना चाहिए। उदाहरणार्थ एकताल में निबद्ध बंदिश में 'तिरकिट' की जगह पर चार वर्ण युक्त शब्द अगर रहता है वह बंदिश के ताल में बंधा हुआ प्रतीत होगा।''[9]

संगीत मुख्यतः श्राव्य कला है तथापि संगीत के स्वर, लय राग व ताल को विशिष्ट चिन्हों द्वारा दर्शाकर स्वरलिपि अंकित किया गया है लेकिन गायन–वादन की सभी बारीकियों को स्वर–लिपि और ताल–लिपि के द्वारा दर्शाना सम्भव नहीं है। किस बोल को कितने वजन के साथ बजाना है कहाँ पर बोलों को ऑस के साथ बजाना है कहा किस बोल पर मींड या घिस्सा का काम करना है यह सब केवल सुनकर ही सीखा जा सकता है।

''बंदिश में ताल के साथ–साथ लय का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। लय तथा ताल के अनुसार ही बंदिशों को गाना चाहिए। बंदिश की लय उतनी ही हो कि शब्दों के अर्थ गठाव तथा बंदिश की आकृति बिखरे नही। अगर बंदिश की

[4] लेख– बंदिश रचना आवश्यक तत्व एवं प्रविधि, 'संगीत' अप्रैल–1994, पृ0 9
[5] तबला पुराण पं0 विजय शंकर मिश्र, पृ0–64, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स
[6] संगीत कला विहार– जून 2005, पृ0–23
[7] प्रो0 मुकुन्द भाले जी द्वारा प्राप्त (अध्यक्ष अवनद्ध वाद्य विभाग, इन्दिरा कला विश्वविद्यालय, खैरागढ़, (छत्तीसगढ़))
[8] ''संगीत'' मई–2008, पृ0–5 लेख ''ख्याल में बंदिश का महत्व'' –मनीषा कुलकर्णी
[9] ''संगीता'' मई 2007, पृष्ठ–7, लेख– ''राग, रस और बंदिश,'' अभय दुबे

लय गलत ढंग से उठायी गयी तो आगे का पूरा राग विस्तार बिखरा हुआ तथा निष्प्राण प्रतीत होता है।''[10]

यदि लय बन्दिश के अनुसार रहेगी तो बन्दिश भी कसावदार बनेगी उसमें जीवन्तता आयेगी। बन्दिश के प्रस्तुतीकरण के समय बंदिश की भावनाओं को उसकी संवेदनाओं, उसके मिज़ाज को समझकर प्रस्तुत करना होता है क्योंकि प्रत्येक बन्दिश का अपना पृथक अस्तित्व होता है बिना मिज़ाज समझ कर बंदिश की प्रस्तुती नीरसता कायम कर देगी तथा बंदिश की खास सुन्दर बारीकियों का आनन्द नहीं लिया जा सकेगा।

''नई रचनाओं में विलम्बित और जहा साम्य मिल जाता है उसमें गायक एक लय से दूसर लय में बड़ी। सहजता से तैरता हुआ चला जाता है शब्दों को न लय टूटने का झटका लगता है और न भाव के रस परिपाक में बाधा पड़ती है इस क्रमिक स्वर–विस्तार में भाव का खंडन नहीं होता वरन, अनुभव की एक नई सघनता से परिचय होता है। स्वर व लय का तादात्म्य आसानी से होने लगता है।''[11]

इस प्रकार बन्दिश शब्द से यही आशय स्पष्ट होता है कि किसी विषय वस्तु पर कुछ प्रतिबन्ध लगाना और यह प्रतिबन्ध उस विषय वस्तु से सम्बन्धित नियमों के अंतर्गत लगाया जाता है। प्रायः बोल चाल की भाषा में भी जब हम ''बंदिश शब्द का इस्तेमाल करते है तो उसका आशय भी प्रतिबन्धों के लगाने से ही सम्बन्ध रखता है। प्रायः घर के बड़े बुर्जुगों द्वारा भी कभी घर के बच्चों पर कोई प्रतिबन्ध या बंदिश लगाया जाता है तो वह समाज के नियमों के अनुसार ही प्रतिबन्धों के रूप में लगाये जाते है। अतः बंदिश के इन्ही भावार्थो को संगीत में समाहित करते हुए विभिन्न प्रकार की रचनाओं की प्रस्तुति हेतु ''बन्दिश का नामकरण किया जाना प्रतीत होता है संगीत का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है, जिसके अंतर्गत गायन, वादन नृत्य सभी समाहित है और इन सभी विधाओं में विभिन्न प्रकार की प्रस्तुतियों को बन्दिशों के नाम से ही जाना जाता है जैसे कि गायन में

1. गायन के अंतर्गत बड़े एवं छोटे ख्याल की बन्दिश, त्रिवट, टप्पा, ठुमरी, दादरा, होरी, कजरी, चैती की बन्दिशे, ध्रुपद धमार की बन्दिशे, गीत, गजल, भजन, कव्वाली आदि की बन्दिशे।
2. तन्त्र वाद्यों में बजाये जाने वाली मसीतखानी एवं रजाखानी की गते तथा अन्य विभिन्न प्रकार की धुनों की बन्दिशें जैसे पहाड़ी धुन की बन्दिशे, राजस्थानीमांड की बन्दिश इत्यादि।
3. कथक नृत्य में प्रयोग की जाने वाली बन्दिशे सलामी, आमद, तोड़ा, टुकड़ा, परन, लड़ी, गत, तिहाई, प्रिमलू।
4. तबले में प्रयुक्त की जाने वाली बन्दिशें पेशकारा, चलन, कायदा, गत कायदा रेला, टुकड़ा, मुखड़ा–मोहरा, परन–चक्करदार फरमाईशी, कमाली चक्करदार नौहक्का, नौधा की तिहाई चक्करदार तिहाई गतें इत्यादि।

इस प्रकार हम देखते है कि संगीत की सभी विधाओं में चाहे वह गायन हो वादन अथवा नृत्य, बन्दिशों का प्रयोग अत्यन्त व्यापक रूप से विभिन्न स्वरूपों में किया जाता है। इससे यह भी ज़ाहिर होता है कि प्रत्येक विधा में प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न बंदिशों में विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्धों का प्रयोग किया गया है और इन प्रतिबन्धों में गायन विधा के अनुरूप गायन में प्रयुक्त की जाने वाली बन्दिशों के ऊपर नियम लगाये गये है तथा वादन एवं नृत्य विधा के अनुरूप उनकी बन्दिशों पर भी नियम लगाये गये है।

शोध कार्य के शीर्षक ''लखनऊ, तबला घराने की बन्दिशों का सौन्दर्यपरक अनुशीलन'' के अनुसार तबले में प्रयुक्त की जाने वाली बन्दिशों के सौन्दर्यात्मक स्वरूपों की चर्चा करने के पूर्व तबले में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न बन्दिशों पर लागू होने वाले नियमों की चर्चा किया जाना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि इन्ही विभिन्न प्रकार के नियमों के कारण बन्दिशों का अलग नामकरण होता है। तबले की रचनाओं को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है– (अ) विस्तारशील रचनाएं तथा (ब) – अविस्तरशील रचनाएं। वे रचनाएं जिनका विस्तार करने के पश्चात तिहाई से समापन किया जाता है विस्तारशील रचनाएं कहलाती है जैसे पेशेकार, कायदा, रेला। विस्तार किये बिना इन रचनाओं का वादन पूर्ण नहीं माना जाता। जो रचनाएं अपने मूल रूप में ही बिना विस्तार के बजाई जाती है उन्हें अविस्तारशील बंदिशें कहतें हैं जिनमें गतें, टुकड़े, परन, मुखड़ा, तिहाई आदि प्रमुख है।

पेशकार– स्वतंत्रत तबला वादन में पेश की जाने वाली पहली रचना। कुछ लोग इसे पेशकारा भी कहते हैं लेकिन वास्तव में यह शब्द फारसी के पेश और कार इन दो शब्दों से बना है जिसका अर्थ है पेश अर्थात पहली, कार यानि रचना। इस अर्थ में यह बहुत ही उचित है कि प्रस्तुत की जाने वाली प्रथम रचना को पेशकार कहा जाए।

पेशकार एक अत्यन्त सौंदर्यपूर्ण रचना है जिसका अनिर्बंधित विस्तार किया जा सकता है क्योंकि इसके विस्तार में नियमों का कठोर बंधन नहीं है। यदि दूसरे शब्दों में कहें तो इसके विस्तार में एक ही नियम है और वह है सौन्दर्यात्मकता। जिसका आधार है दायें बायें की नादात्मकता, लचीलापन और बलाघात।

मध्यगति में बजाई जाने वाली इस रचना में मूल बोलों के अतिरिक्त अन्य सभी बोलों का समावेश करने की स्वतंत्रता तथा विविध लयकारीयुक्त वादन इस रचना को एक अनोखा सौंदर्य प्रदान करता है। पहली रचना होने के कारण यह वादन भी अपने सोच, वादन क्षमता और लय तथा वाद्य (वादन पद्धति तथा रियाज) पर उसकी पकड़ को प्रदर्शित करती है।

दिल्ली घराने में पेशकार का प्रारम्भिक विकास हुआ जो क्रमशः फर्रूखाबाद घराने में जाकर पूर्णत्व को प्राप्त हुआ और पिछली शताब्दी के महान तबला वादक उस्ताद अहमद जान थिरकवा इस रचना के सशक्त वादक के रूप में जाने गये। पूर्ण रूप में इस रचना की सौंदर्यात्मकता का लिखना यो

[10] ''संगीत'' जून 2009, पृ0–38, लेख– ''बंदिश में लयताल एवं बंदिशों का प्रस्तुतीकरण'' अभय दुबे
[11] ''कोशिश संगीत समझने की,'' केशव चन्द्र वर्मा, पृ0–40

बोलकर बताना लगभग असंभव है इसे महसूस ही करना पड़ेगा।

धीऽक्ड, धिंधा, ऽधाधिंधा, धाऽक्डधातित्, धाधा तिंता आदि बोलों से प्रारम्भ होकर बाद में इसमें कमला की विविधता आ जाती है जो वादक–दर–वादक भिन्न–भिन्न होती है।

कायदा– फारसी के कैद से निर्मित इस शब्द का सीधा अर्थ है नियम। विभिन्न घरानों की वादन पद्धति को आत्मसात करने के लिये उस घराने के हाथ के रखाव, जिसे हथौटी भी कह हैं, को नियमित करने के लिए प्रारंभिक कवायद या एक्सरसाइज के तौर पर निर्मित ये रचनाएं कायदा इस नामाभिधान को प्राप्त हुई। बाद में इसकी कुछ सौंदर्यपूर्ण रचनाओं की निर्मिति हुई जो प्रदर्शन योग्य भी लगीं अतः उनका प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ और बाद में अपने विस्तार के नियमबद्ध तरीके के चलते यह रचनाएं हर घरानेकी विशिष्टता बन गई।

कायदों को दिल्ली और अजराड़ा घरानें में विशेष स्थान दिया गया। कायदे की मूल रचना में किसी एक या दो शब्दों को महत्वपूर्ण स्थान होता है जिनका सिलसिलेवार विस्तार इसकी मुख्य विशेषता है। मूल कायदा एक सूत्र वाक्य की तरह होता है जिसकी टीका या भाष्य मानो उसका विस्तार है।

रेला– रेला यानि प्रवाह। जाहिर है कि तीव्र गतियुक्त रचना की प्रवाहमानता दिखा सकती है और इसीलिए रेला–इस रचना का वादन द्रुतगति में होता है। द्रुतगति में सरलतापूर्वक बज सकने योग्य बोल तिरिकिटतक या धिरधिर किटतक इन बोल समूहों से अधिकतर इनकी निर्मिति की जाती है।

पेशकार, कायदा और रेला तीनों ही विस्तारशील रचनाएं हैं जिनमें पेशकार का अमर्यादित, कायदों का सिलसिलेवार बहुसंख्यक और रेले का संक्षिप्त विस्तार होता है।

अविस्तारशील बंदिशों में गत, टुकड़ा और परनों का विशेष स्थान है। गत शब्द ही गति को प्रदर्शित करता है जबकि टुकड़ा यह शब्द खंडत्व को दिखाता है। परम शब्द संभवतः पर्ण (वृक्ष का पत्ता) से निकला है। इनमें से गतें मूलतः तिहाई रहित होती है और टुकड़े तथा परम तिहाई युक्त। गतों के अनेक प्रकार है और पंडित निखिल घोष के अनुसार 52 प्रकार की गतों के नाम मिलते हैं फिर भी सुविधा की दृष्टि से इनको दो वर्गों में बांटा जा सकता है (अ) शुद्ध गतें (ब) मिश्र गतें।

टुकड़ा यानि तिहाई युक्त ऐसी रचना जो मध्यद्रुत गति में न्यूनतम दो तथा अधिकतम चार आवर्तनों की होती है। पूरब के घरानों में इस रचना प्रकार के विविध रूप दिखाई देते है।

परन टुकड़े से लंबी रचना होती है जिसमें अधिकतर बोलों की रचना दुहराते हुए की जाती है। भरी–खाली के बोलों को दोहराने से एक विशेष प्रकार के छंद का निर्माण होता है जो इस रचना को विशिष्टता प्रदान करता है। इस रचना में गंभीर और जोरदार तथा धागेतिट, क्डधातिट, धेत्धेत्, त्रकेधेत्, तगेऽन्न, गदिगन आदि बोलों का प्रयोग विशेष रूप से होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

	पुस्तक / ग्रन्थ	लेखक / ग्रन्थकार	प्रकाशन
1-	The Tabl of Lucknow Gharana	Kippen James	Combridge Uniersity Press New Yartz, New Rochelle, Melborune Syndey
2-	लखनऊ की संगीत परम्परा	मिश्रा सुशीला	संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ।
3-	संगीत के घरानों की चर्चा	चौबे सुशील कुमार	उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4-	तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियाँ	योगमाया शुक्ला	दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन।
5-	पखावज एवं तबले के घरानें एवं परम्परायें	डा0 आबान ई0 मिस्त्री	पं0के0सी0एस0 जीजिना, स्वर साधना समिति, मुम्बई।
6-	तबले के घराने वादन शैलियों एवं बन्दिशें	राम सुदर्शन	कनिष्क प्रकाशन दिल्ली।
7-	तबले पर दिल्ली और पूरब	विशिष्ट सत्यनारायण	संगीत कार्यालय हाथरस।
8-	तबला वादन कला की तकनीक एवं सौन्दर्य पक्ष	श्रीवास्तव सुनीता	अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।
9-	भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन	सेन अरूण कुमार	मध्य प्रदेश अकादमी भोपाल।

अन्य स्रोत–

पत्र– पत्रिकाएं, इण्टरनेट, संगीत की विभिन्न विधाओं के विद्वानजनों से भेंटवार्ता आदि।

RRIJM 2015, All Rights Reserved